श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

Address
Here

श्रमण संघीय प्रथम पटट्धर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पटट्धर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पटट्धर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

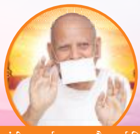
श्रमण संघीय चतुर्थ पटट्धर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

जुलाई - तृतीय, अंक - 19 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव विशेषांक ।। 75 वर्षों की साधना, सेवा, संस्कार, संघीय एकता की गौरव गाथा ।। वर्तमान का संकल्प-भविष्य का मार्गदर्शन

मंगल संदेश

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

श्रमण परम्परा भारतीय संस्कृति की उस अमूल्य आध्यात्मिक धरोहर का नाम है, जिसने तप, त्याग, संयम, करुणा, अहिंसा और आत्मकल्याण के माध्यम से असंख्य जनों के जीवन को दिशा प्रदान की है। श्रमण संघ की 75 वर्षों की यह गौरवशाली यात्रा केवल एक संगठन की उपलब्धियों का इतिहास नहीं, बल्कि साधना, संस्कार, सेवा और समन्वय की प्रेरणादायी गाथा है। यह अमृत महोत्सव उसी गौरवशाली यात्रा का अभिनंदन एवं भावी शताब्दी के लिए नवसंकल्प का पावन अवसर है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि इस अमृत महोत्सव वर्ष के राष्ट्रीय आयोजनों का संचालन श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के माध्यम से किया जा रहा है। जैन कॉन्फ्रेंस ने अपने स्थापना काल से ही धर्मप्रभावना, समाज सेवा, शिक्षा, संगठन, संस्कार और राष्ट्रीय चेतना के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। हमें विश्वास है कि देशभर की शाखाओं, महिला एवं युवा इकाइयों तथा समस्त समाजजनों के सहयोग से यह अमृत महोत्सव जन-जन की सहभागिता का राष्ट्रीय अभियान बनेगा।

अमृत महोत्सव के अंतर्गत धर्म-जागरण, चातुर्मास आयोजन, सेवा एवं जनकल्याण परियोजनाएँ, शिक्षा एवं संस्कार अभियान, महिला एवं युवा सशक्तिकरण, सामाजिक जागरण, शोध एवं प्रकाशन, डिजिटल प्रचार-प्रसार तथा राष्ट्रीय समापन समारोह जैसे विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन सभी कार्यक्रमों का उद्देश्य केवल आयोजन करना नहीं, बल्कि श्रमण संस्कृति के शाश्वत मूल्यों को व्यवहार में स्थापित करना, समाज को संगठित करना तथा आने वाली पीढ़ियों को धर्म, सेवा और संस्कारों से जोड़ना है।

हम सभी समाजजनों से अपेक्षा करते हैं कि वे इस ऐतिहासिक अमृत महोत्सव को अपना महोत्सव मानकर तन, मन और धन से सहभागी बनें। प्रत्येक शाखा, प्रत्येक परिवार और प्रत्येक युवा इस महायज्ञ का सक्रिय भागीदार बने तथा अहिंसा, सत्य, संयम, करुणा, सेवा और आत्मानुशासन के आदर्शों को अपने जीवन में उतारते हुए समाज एवं राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में योगदान दें। परमात्मा से मंगलकामना है कि यह अमृत महोत्सव श्रमण संघ की संघीय एकता को और अधिक सुदृढ़ करे, समाज में आध्यात्मिक चेतना का विस्तार करे तथा धर्म, सेवा और संस्कारों की यह अविरल धारा आने वाली पीढ़ियों का पथ सदैव आलोकित करती रहे। 'मंगलाशीर्वाद सहित'

अध्यक्षीय

अमृत महोत्सव वर्ष धर्म-जागरण शुभारम्भ

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय धर्मप्रेमी श्रावक-श्राविकाओं,

श्रमण संघ की 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा के अमृत महोत्सव वर्ष में प्रवेश करना सम्पूर्ण समाज के लिए हर्ष, गौरव और आत्मचिंतन का ऐतिहासिक अवसर है। यह केवल बीते वर्षों की उपलब्धियों का उत्सव नहीं, बल्कि उन महापुरुषों, आचार्यों, संत-साध्वियों एवं समर्पित कार्यकर्ताओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का पावन अवसर है, जिन्होंने अपने त्याग, तप, सेवा और संगठन शक्ति से श्रमण संघ की इस विराट परम्परा का निर्माण किया।

परम पूज्य आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज ने इस ऐतिहासिक अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय आयोजन का दायित्व श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली को प्रदान कर हम सभी पर जो विश्वास व्यक्त किया है, वह हमारे लिए सम्मान के साथ-साथ एक महान उत्तरदायित्व भी है। यह दायित्व केवल कार्यक्रमों के आयोजन का नहीं, बल्कि श्रमण संस्कृति के मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने का राष्ट्रीय संकल्प है।

इसी भावना के साथ अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत धर्म-जागरण, सेवा एवं जनकल्याण, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, स्किल इंडिया अभियान, अहिंसा रैली, राष्ट्रीय कलश यात्रा, चातुर्मास केन्द्रीय आयोजन, जैन अनुसंधान केन्द्र की स्थापना, डिजिटल संग्रहालय, जैन प्रकाश विशेषांक, राष्ट्रीय सामाजिक अभियान, Vision-2052 दस्तावेज, सामूहिक दीक्षा, राष्ट्रीय सम्मान समारोह तथा भव्य राष्ट्रीय समापन समारोह जैसे अनेक प्रेरणादायी कार्यक्रमों की व्यापक रूपरेखा तैयार की गई है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य केवल आयोजन करना नहीं, बल्कि समाज को सेवा, संस्कार, संगठन और समरसता के सूत्र में जोड़ना है।

'जैन प्रकाश' का यह अमृत महोत्सव विशेषांक भी उसी राष्ट्रीय अभियान का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें प्रकाशित विचार, कार्यक्रम, इतिहास और भावी योजनाएँ आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का आधार बनेगी तथा श्रमण संघ की गौरवगाथा को स्थायी स्वरूप प्रदान करेंगी।

आइए, हम सभी मिलकर इस अमृत महोत्सव को केवल एक वर्ष का आयोजन न बनाकर, समाज के उज्ज्वल भविष्य का सशक्त अभियान बनाएँ। हमारी एकता, हमारी सेवा, हमारे संस्कार और हमारा समर्पण ही इस अमृत महोत्सव की सबसे बड़ी सफलता होंगे।

सम्पादकीय

श्री वर्द्धमान स्था. जैन श्रमण संघ

"अमृत से शताब्दी की ओर"

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

इतिहास केवल तिथियों और घटनाओं का संकलन नहीं होता, बल्कि वह उन आदर्शों, मूल्यों और संकल्पों की जीवंत यात्रा होता है, जो पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते हैं। श्रमण संघ की 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा ऐसा ही प्रेरणादायी इतिहास है, जिसने तप, त्याग, संयम, सेवा, समरसता और संगठन की शक्ति से समाज को निरन्तर नई दिशा प्रदान की है। आज जब हम "श्रमण संघीय अमृत महोत्सव" मना रहे हैं, तब यह केवल अतीत का उत्सव नहीं, बल्कि भविष्य के निर्माण का राष्ट्रीय संकल्प भी है।

इस अमृत महोत्सव का मूल भाव है-"75 वर्ष की गौरवगाथा-अगले शताब्दी वर्ष की दिशा।" यही भावना इस विशेषांक के प्रत्येक पृष्ठ में प्रतिबिम्बित होती है। हमने प्रयास किया है कि यह अंक केवल समाचारों का संग्रह न होकर श्रमण संघ की विचारधारा, उपलब्धियों, सेवा परम्परा, संगठनात्मक विकास और भावी योजनाओं का एक प्रामाणिक दस्तावेज बने। पूज्य आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज के मंगल आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस को अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय आयोजन का दायित्व प्राप्त हुआ है। यह केवल एक संस्था का दायित्व नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज के विश्वास और अपेक्षाओं का प्रतीक है। इसी भावना के साथ अमृत महोत्सव वर्ष में धर्म-जागरण, सेवा एवं जनकल्याण, सामाजिक जागरण, महिला एवं युवा सशक्तिकरण, शोध, प्रकाशन, डिजिटल पहल तथा राष्ट्रीय स्तर के अनेक कार्यक्रमों की व्यापक योजना तैयार की गई है।

'जैन प्रकाश' का यह 'अमृत विशेषांक' उसी राष्ट्रीय अभियान का साहित्यिक स्वरूप है। हमारा उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि प्रत्येक पाठक को इसका सक्रिय सहभागी बनाना है।

हम मानते हैं कि किसी भी महोत्सव की वास्तविक सफलता उसके आयोजनों में नहीं, बल्कि उन स्थायी परिवर्तनों में होती है जो समाज के जीवन में दिखाई दें। यह विशेषांक उन सभी संत-साध्वी भगवंतों, पूर्वजों, समाजसेवियों, दानदाताओं, कार्यकर्ताओं और शुभचिन्तकों को विनम्र श्रद्धांजलि एवं अभिनन्दन है, जिनके त्याग और समर्पण ने श्रमण संघ की इस गौरवशाली परम्परा को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं। साथ ही यह आने वाली पीढ़ी के लिए एक प्रेरक दस्तावेज भी है, जो उन्हें बताएगा कि विरासत केवल प्राप्त नहीं होती, उसे निरन्तर कर्म, सेवा और संस्कारों से समृद्ध भी करना पड़ता है।

हम सभी मिलकर इस अमृत महोत्सव को केवल स्मृति का उत्सव न रहने दें, बल्कि इसे अगले शताब्दी वर्ष की सशक्त आधारशिला बनाएँ। यही इस विशेषांक का उद्देश्य है, यही हमारी सम्पादकीय भावना है और यही हम सबका सामूहिक संकल्प भी।

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM • POLUR
JAIN SILKS & READYMADES Fashion for Family • POLUR
Varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION • POLUR • TIRUVANAMALAI • VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606-803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव : एक राष्ट्रीय चेतना, एक ऐतिहासिक संकल्प

श्रमण संघ की 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा भारतीय आध्यात्मिक, सामाजिक और संगठनात्मक इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। यह यात्रा केवल समय की नहीं, बल्कि तप, त्याग, साधना, सेवा, समरसता और संघीय एकता के उन अमूल्य आदर्शों की यात्रा है, जिन्होंने अनगिनत जीवनों को दिशा प्रदान की है। श्रमण संघीय अमृत महोत्सव उसी प्रेरणादायी विरासत का राष्ट्रीय अभिनंदन है।

यह अमृत महोत्सव केवल स्मृतियों का उत्सव नहीं, बल्कि समाज को नई ऊर्जा, नई दिशा और नए संकल्पों से जोड़ने का व्यापक जन-अभियान है। इसका उद्देश्य धर्म को जीवन से, सेवा को समाज से, संस्कारों को परिवार से, संगठन को जन-जन से और युवा शक्ति को राष्ट्र निर्माण से जोड़ना है। इसी भावना के साथ वर्षभर देशभर में धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सेवा, शोध, प्रकाशन, महिला, युवा तथा डिजिटल जागरण से जुड़े विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

प्रत्येक कार्यक्रम केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि श्रमण संस्कृति के किसी न किसी जीवन-मूल्य का सशक्त प्रतिनिधि है। कहीं सेवा करुणा का संदेश देती है, कहीं संस्कार नई पीढ़ी का निर्माण करते हैं, कहीं शोध भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है तो कहीं संगठनात्मक कार्यक्रम समाज की एकता को और अधिक सुदृढ़ बनाते हैं। इन सभी प्रयासों का अंतिम लक्ष्य एक ही है-"सशक्त संगठन, संस्कारित समाज और प्रेरणामय भविष्य।"

प्रस्तुत हैं श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के वे राष्ट्रीय कार्यक्रम, जो इस ऐतिहासिक अभियान को जन-जन तक पहुँचाने तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमिट प्रेरणा छोड़ने का संकल्प लेकर आयोजित किए जा रहे हैं।

अक्षय तृतीया 2026 के पवित्र दिन श्री शिवाचार्य भगवन के श्रीचरणों में मंगल शुभारम्भ

सूरत (गुजरात) : दिनांक 20 अप्रैल 2026 को अक्षय तृतीया का भव्य आयोजन तप सूर्य आचार्य सम्राट डॉ. शिवमुनि जी म. के सान्निध्य में आयोजित हुआ। भगवन् ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि आज अक्षय तृतीया का पावन दिवस और आज से ही श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के अमृत महोत्सव वर्ष का भी शुभारम्भ हो रहा है।

आचार्य भगवन् ने श्रमण संघ के 75वें वर्ष में प्रवेश पर फरमाया कि हमारा यह श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ अनेक भव्यात्माओं के निस्वार्थ त्याग का फल है। इस स्थापना में हमारी मातृसंस्था श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का बहुमूल्य योगदान है। श्रमण संघ आज अपने 74 वर्ष पूर्ण कर 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जैन कॉन्फ्रेंस के तत्वावधान में इसका अमृत महोत्सव आयोजन सादड़ी की पुण्य धरा पर होना संभावित है।

अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर जैन कॉफ्रेन्स के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन ने अपने वक्तव्य में जैन कॉन्फ्रेंस के समस्त राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से पूज्य आचार्य भगवान के वर्षीतप और साधना के लिए हार्दिक वंदन - अभिनंदन करते हुए सभी तपस्वी साधु-साध्वी भगवंतों एवं समस्त श्रावक-श्राविकाओं को हार्दिक मंगलकामनाएँ प्रेषित किया। साथ ही जैन कान्फ्रेंस द्वारा आरंभ किये जा रहे डिजिटल प्लेटफार्म का शुभारंभ किया जाएगा, जिसका विस्तार भी निकट भविष्य में चरणबद्ध रूप से किया जाएगा। राष्ट्रीय महामंत्री श्री अमितराय जैन ने ऐतिहासिक तथ्यों को जोड़ते हुए अपने सारगर्भित विचार रखे।

इस अवसर पर आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज द्वारा टीकाकृत श्री अनुत्तरोतपातिक सूत्र - तृतीय संस्करण, श्री उत्तराध्ययन सूत्र पद्यमय संस्करण अनुवाद स्वाध्यायी धर्मीचन्द चोपड़ा, अंतर्मन के स्वर-निशांत मुनि भजन संकलन, 'प्रमाद से प्रमोद' सजग जीवन की साधना - लेखक गुरुभक्त श्री अतुल जैन आदि ग्रंथों व पुस्तकों का विमोचन किया गया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति के मध्य श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष के लोगो (प्रतीक) का लोकार्पण हुआ।

चातुर्मास काल में 7500 विशेष अमृत महोत्सव नोटपैड का वितरण

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत समाज में संगठनात्मक चेतना, जनसंपर्क एवं अमृत महोत्सव के संदेश के व्यापक प्रसार के उद्देश्य से '7,500 विशेष अमृत महोत्सव नोटपैड' तैयार किए गए हैं। इन आकर्षक एवं उपयोगी नोटपैडों का वितरण देशभर में आयोजित होने वाले 'चातुर्मास काल' के दौरान संत-साध्वी भगवंतों के पावन सान्निध्य में किया जाएगा। इन विशेष नोटपैडों पर श्रमण संघीय अमृत महोत्सव का आधिकारिक लोगो (Logo), प्रेरक संदेश तथा जैन कॉन्फ्रेंस की पहचान अंकित की गई है। दैनिक उपयोग की यह सामग्री केवल लेखन का माध्यम नहीं होगी, बल्कि वर्षभर अमृत महोत्सव के उद्देश्य, संगठन की गतिविधियों एवं श्रमण संस्कृति के मूल्यों की निरंतर स्मृति भी कराएगी।

चातुर्मास के दौरान देशभर में आयोजित प्रवचन, धर्मसभाओं, स्वाध्याय, महिला एवं युवा कार्यक्रमों तथा विभिन्न सामाजिक आयोजनों में इन नोटपैडों का वितरण किया जाएगा, जिससे अधिकाधिक समाजजन अमृत महोत्सव अभियान से आत्मीय रूप से जुड़ सकें। यह पहल संगठन और समाज के बीच संवाद को सुदृढ़ करने के साथ-साथ अमृत महोत्सव के संदेश को घर-घर तक पहुँचाने का प्रभावी माध्यम बनेगी।

यह वितरण अभियान केवल स्मृति-चिह्न प्रदान करने का कार्यक्रम नहीं, बल्कि अमृत महोत्सव वर्ष को जनभागीदारी का राष्ट्रीय अभियान बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रत्येक नोटपैड समाज के लिए सेवा, संस्कार, संगठन और समर्पण का संदेश लेकर जाएगा तथा श्रमण संघ की गौरवशाली 75 वर्षीय यात्रा का प्रेरक प्रतीक बनेगा।

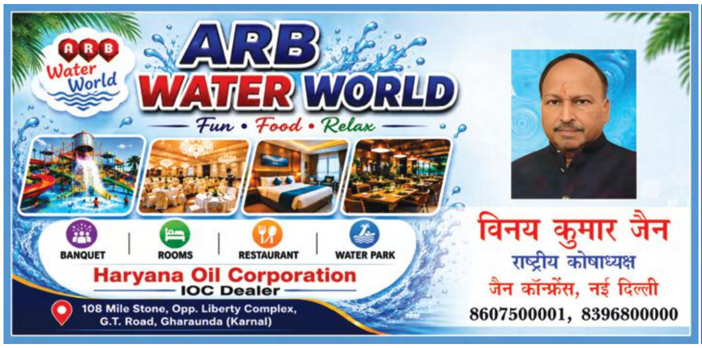

श्रमण संघीय अमृत महामहोत्सव हेतु राष्ट्रीय आयोजन समिति का गठन

श्री अतुल जैन, दिल्ली
राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री विजय जैन, पानीपत
राष्ट्रीय चेयरमैन

श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन

श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन, दिल्ली
राष्ट्रीय अध्यक्ष-ज्ञान प्रकाश योजना

नई दिल्ली : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की स्थापना के गौरवमयी 75 वर्ष (1952-2027) पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले 'श्रमण संघीय अमृत महामहोत्सव' के सफल संचालन हेतु श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के अंतर्गत श्रमण संघीय अमृत महामहोत्सव राष्ट्रीय आयोजन समिति का गठन किया गया है।

इस ऐतिहासिक आयोजन के चार प्रमुख आधार स्तम्भ एवं मुख्य लाभार्थी के रूप में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन-दिल्ली, राष्ट्रीय चेयरमैन श्री विजय जैन-पानीपत, राष्ट्रीय वाइस चेयरमैन श्री नरेश बोहरा जैन-मुंबई तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष-ज्ञान प्रकाश योजना श्री नरेश आनन्द प्रकाश जैन-दिल्ली सम्पूर्ण अमृत महामहोत्सव अभियान का नेतृत्व करेंगे। समिति के मुख्य मार्गदर्शक श्री रवीन्द्रनाथ जैन-दिल्ली एवं मुख्य संयोजक श्री जसवंत जैन-दिल्ली के मार्गदर्शन में आयोजन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर संयोजक एवं प्रमुख सहयोगियों की घोषणा की गई है।

संयोजकगणों में श्री रमेश भण्डारी जैन-इन्दौर, डॉ. अमितराय जैन-बड़ौत, श्री विनय कुमार जैन-पानीपत, श्री विपुल जैन-दिल्ली, श्रीमती संतोष जैन-दिल्ली एवं श्री जीवनराज पुनमिया जैन-कोल्हापुर सादड़ी को दायित्व सौंपा गया है।

प्रमुख सहयोगीगणों में श्री सुभाष ओसवाल जैन-दिल्ली, श्री बाबूलाल रांका जैन-बेंगलुरु, श्री अशोक रांका जैन-बेंगलुरु, श्री महावीर रांका जैन-चेन्नई, श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन-औरंगाबाद, श्री अशोक मेहता जैन-सूरत, श्री महेन्द्र बोकरिया जैन-दिल्ली, श्री जयन्तीलाल कूकड़ा जैन-सूरत, श्री सुदर्शन जैन-दिल्ली, श्री अंकुर जैन-दिल्ली, श्री सुरेश लुणावत जैन-चेन्नई, श्री रतन सिंघवी जैन-बेंगलुरु, श्री प्रशान्त जैन-दिल्ली, श्री शशिकुमार 'पिंटू' जैन-मालेगाँव, श्री आकाश मादरेचा जैन-सूरत, श्री संजय जैन-दिल्ली तथा श्री रजनीश जैन 'राज'-दिल्ली को सम्मिलित किया गया है। अमृत महामहोत्सव वर्ष के अंतर्गत देशभर में धार्मिक, सामाजिक, सेवा, शिक्षा एवं जनजागरण से जुड़े अनेक राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। यह अभियान श्रमण संघ की 75 वर्षों की गौरवगाथा को जन-जन तक पहुँचाने तथा शताब्दी वर्ष 2052 की दिशा में संगठन को नई ऊर्जा प्रदान करेगा।

चातुर्मास काल में 75,000 विशेष मुखवस्त्रिकाओं का कवर सहित वितरण

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में समाज में जनजागरण, संगठनात्मक एकता एवं अमृत महोत्सव के संदेश के व्यापक प्रसार के उद्देश्य से '**75,000** विशेष मुखवस्त्रिकाएँ (कवर सहित)' तैयार की गई हैं। आकर्षक स्वरूप में निर्मित इन मुखवस्त्रिकाओं पर अमृत महोत्सव का आधिकारिक लोगो, प्रेरक संदेश तथा श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की पहचान अंकित की गई है, जिससे प्रत्येक वितरण समाज में इस ऐतिहासिक अभियान का संदेशवाहक बन सके।

इन विशेष मुखवस्त्रिकाओं का वितरण देशभर में आयोजित होने वाले 'चातुर्मास काल' के दौरान संत-साध्वी भगवंतों के पावन सान्निध्य में किया जाएगा। प्रवचन सभाओं, धर्मसभाओं, स्वाध्याय कार्यक्रमों, महिला एवं युवा सम्मेलनों तथा विभिन्न धार्मिक आयोजनों में श्रद्धालुओं को इनका वितरण कर अमृत महोत्सव वर्ष से अधिकाधिक समाजजनों को जोड़ा जाएगा।

मुखवस्त्रिका जैन परम्परा में संयम, शुचिता और अहिंसा का प्रतीक है। अमृत महोत्सव के अवसर पर इसका यह विशेष संस्करण केवल उपयोगी सामग्री नहीं, बल्कि श्रमण संस्कृति के मूल्यों और संघीय एकता का प्रेरक संदेश लेकर प्रत्येक परिवार तक पहुँचेगा। इसके साथ प्रदान किया जाने वाला विशेष कवर इस स्मृति को और अधिक गरिमामय एवं संग्रहणीय बनाएगा।

यह वितरण अभियान अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय जनसंपर्क अभियान का एक महत्वपूर्ण अंग है। प्रत्येक मुखवस्त्रिका समाज को यह प्रेरणा देगी कि धर्म केवल आचरण का विषय नहीं, बल्कि सेवा, संस्कार, समर्पण और संगठन के माध्यम से जीवन में उतरने वाली सतत् साधना है।

अमृत महोत्सव भजन श्रृंखला : श्रद्धा, भक्ति और प्रेरणा का संगीतमय अभियान

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में समाज में भक्ति, संस्कार एवं आध्यात्मिक चेतना का संचार करने के उद्देश्य से 'अमृत महोत्सव भजन श्रृंखला' तैयार की जा रही है। इस विशेष श्रृंखला में श्रमण संस्कृति, आचार्य परम्परा, अहिंसा, सेवा, संघीय एकता तथा आध्यात्मिक जीवन-मूल्यों पर आधारित प्रेरणादायी भजनों का निर्माण किया जा रहा है, जिससे अमृत महोत्सव का संदेश संगीत के माध्यम से जन-जन तक पहुँच सके।

इस श्रृंखला के अंतर्गत तैयार किए गए 'कुछ विशेष भजनों का लोकार्पण' किया जा चुका है, जिन्हें समाजजनों द्वारा अत्यंत सराहना एवं आत्मीयता के साथ स्वीकार किया गया है। शेष भजनों का भी चरणबद्ध रूप से विमोचन किया जाएगा, ताकि सम्पूर्ण अमृत महोत्सव वर्ष में भक्ति और प्रेरणा का यह संगीतमय प्रवाह निरंतर चलता रहे।

यह भजन श्रृंखला केवल संगीत का संग्रह नहीं, बल्कि अमृत महोत्सव वर्ष की आध्यात्मिक पहचान है। इसका उद्देश्य श्रद्धा, भक्ति और संस्कारों के माध्यम से समाज को जोड़ना तथा श्रमण संस्कृति के अमृत संदेश को प्रत्येक हृदय तक पहुँचाना है।

स्किल इंडिया अभियान : आत्मनिर्भर युवा-सशक्त समाज

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत युवाओं को आत्मनिर्भर, कुशल एवं रोजगारोन्मुख बनाने के उद्देश्य से "स्किल इंडिया अभियान" का राष्ट्रीय दायित्व श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की युवा शाखाओं को सौंपा गया है।

आज का युवा केवल डिग्री नहीं, बल्कि कौशल चाहता है। बदलते समय में रोजगार, स्वरोजगार, डिजिटल तकनीक, व्यवसाय, स्टार्टअप और नेतृत्व क्षमता का विकास समाज की आवश्यकता बन चुका है। इसी उद्देश्य से युवा शाखाएँ देशभर में कौशल विकास, रोजगार मार्गदर्शन एवं उद्यमिता प्रोत्साहन का व्यापक अभियान संचालित करेंगी।

देश के 15 राज्यों में संचालित युवा शाखाएँ अपने-अपने क्षेत्रों में युवाओं का कौशल मानचित्र (Skill Mapping) तैयार करेंगी। प्रत्येक राज्य कम से कम 2,000 युवाओं को इस अभियान से जोड़ेगा तथा वर्षभर में कुल 30,000 युवाओं तक पहुँचने का राष्ट्रीय लक्ष्य रखा गया है।

अभियान के अंतर्गत युवाओं को डिजिटल कौशल, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ग्राफिक डिजाइनिंग, डिजिटल मार्केटिंग, अकाउंटिंग, ई-कॉमर्स, मोबाइल रिपेयरिंग, इलैक्ट्रिकल, प्लम्बिंग, फैशन डिजाइनिंग, ब्यूटी एवं वेलनेस, फोटोग्राफी, वीडियो एडिटिंग, पब्लिक स्पीकिंग, व्यक्तित्व विकास, अंग्रेजी संवाद, उद्यमिता, स्टार्टअप, वित्तीय साक्षरता तथा सरकारी कौशल योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी।

युवा शाखाएँ विभिन्न औद्योगिक संस्थानों, प्रशिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, स्टार्टअप संगठनों, उद्योगपतियों एवं रोजगार एजेंसियों के सहयोग से प्रशिक्षण शिविर, जॉब फेयर, करियर मार्गदर्शन शिविर, उद्यमिता कार्यशालाएँ एवं रोजगार परामर्श कार्यक्रम आयोजित करेंगी।

अभियान का उद्देश्य केवल प्रशिक्षण देना नहीं, बल्कि प्रशिक्षित युवाओं को रोजगार, स्वरोजगार अथवा स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ करने के लिए प्रेरित एवं समर्थ बनाना है। प्रत्येक प्रशिक्षित युवा भविष्य में अन्य युवाओं के लिए प्रेरक एवं मार्गदर्शक बने, यही इस अभियान की सफलता होगी।

राष्ट्रीय डिजिटल पोर्टल पर प्रत्येक युवा का कौशल, प्रशिक्षण, प्रमाणपत्र, रोजगार की स्थिति एवं उपलब्धियों का डिजिटल रिकॉर्ड सुरक्षित रखा जाएगा। वर्ष के अंत में उत्कृष्ट युवा शाखाओं, प्रशिक्षकों एवं आत्मनिर्भर युवाओं का राष्ट्रीय सम्मान किया जाएगा। स्किल इंडिया अभियान केवल रोजगार का कार्यक्रम नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और राष्ट्र निर्माण की दिशा में युवा शक्ति को संगठित करने का अमृत महोत्सव का राष्ट्रीय संकल्प है।

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ : अमृत महोत्सव का राष्ट्रीय महिला जागरण अभियान

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत समाज निर्माण के सबसे महत्वपूर्ण आयाम "बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ" अभियान का राष्ट्रीय दायित्व श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की महिला शाखाओं को सौंपा गया है। इस अभियान का उद्देश्य केवल बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करना नहीं, बल्कि प्रत्येक बेटी को सम्मान, संस्कार, सुरक्षा, शिक्षा और आत्मनिर्भरता से जोड़ते हुए एक सशक्त एवं संस्कारित समाज का निर्माण करना है।

देश के 15 राज्यों में संचालित महिला शाखाएँ इस अभियान को वर्षभर जन-जागरण के रूप में संचालित करेंगी। प्रत्येक राज्य को अपने क्षेत्र में कम से कम '5,000 बालिकाओं तक पहुँचने' का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस प्रकार पूरे देश में '75,000 बालिकाओं' तक प्रत्यक्ष पहुँच बनाकर अमृत महोत्सव को समाज परिवर्तन का प्रभावी अभियान बनाया जाएगा।

अभियान के अंतर्गत महिला शाखाएँ बालिकाओं के विद्यालय प्रवेश, ड्रॉपआउट बालिकाओं को पुनः शिक्षा से जोड़ने, आर्थिक रूप से कमजोर छात्राओं को शिक्षा सहयोग, छात्रवृत्ति, पुस्तक एवं स्टेशनरी वितरण, करियर मार्गदर्शन, प्रतियोगी परीक्षा जागरूकता, डिजिटल शिक्षा, आत्मरक्षा प्रशिक्षण, स्वास्थ्य एवं पोषण शिविर, संस्कार शिविर, प्रतिभा सम्मान समारोह तथा अभिभावक जागरूकता कार्यक्रम जैसे विविध आयामों पर कार्य करेंगी। प्रत्येक कार्यक्रम का उद्देश्य केवल सहायता प्रदान करना नहीं, बल्कि बालिका के सर्वांगीण विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना होगा।

इस अभियान की विशेषता इसका 'डिजिटल मूल्यांकन तंत्र' होगा। प्रत्येक महिला शाखा द्वारा आयोजित कार्यक्रमों का विवरण, लाभार्थी बालिकाओं की संख्या, शिक्षा सहायता, स्वास्थ्य शिविर, संस्कार कार्यक्रम, प्रतिभा सम्मान तथा अन्य गतिविधियों का विवरण राष्ट्रीय डिजिटल पोर्टल पर नियमित रूप से दर्ज किया जाएगा। इसके माध्यम से राज्यवार एवं शाखावार उपलब्धियों का सतत मूल्यांकन किया जा सकेगा तथा वर्ष के अंत में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिला शाखाओं एवं कार्यकर्ताओं का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान भी किया जाएगा। "बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ" अभियान अमृत महोत्सव वर्ष का केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि समाज के भविष्य के निर्माण का संकल्प है। जब प्रत्येक बेटी शिक्षित, संस्कारित, आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बनेगी, तभी एक सशक्त परिवार, जागरूक समाज और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण संभव होगा। महिला शाखाओं के माध्यम से संचालित यह अभियान निश्चित रूप से अमृत महोत्सव वर्ष की सबसे प्रभावशाली एवं स्थायी सामाजिक उपलब्धियों में से एक सिद्ध होगा।

सेवा ही साधना : निःशुल्क नेत्र ऑपरेशन अभियान

"किसी के जीवन में प्रकाश लौटाना ही सच्चे अर्थों में धर्म, सेवा और मानवता की सर्वोच्च साधना है।" श्रमण संघीय अमृत महोत्सव केवल गौरवशाली इतिहास का उत्सव नहीं, बल्कि सेवा, करुणा और जनकल्याण का राष्ट्रीय संकल्प है। इसी भावना को साकार करते हुए श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर एवं जरूरतमंद व्यक्तियों के निःशुल्क नेत्र ऑपरेशन कराने का निर्णय लिया गया है। यह अभियान केवल चिकित्सा सेवा नहीं, बल्कि अनेक परिवारों के जीवन में आशा, आत्मविश्वास और नई रोशनी लौटाने का प्रयास है।

भारत में आज भी अनेक वरिष्ठ नागरिक, श्रमिक, ग्रामीण एवं निर्धन परिवार आर्थिक अभाव के कारण समय पर नेत्र उपचार नहीं करा पाते। ऐसे में यह सेवा अभियान उनके लिए वरदान सिद्ध होगा। इस अभियान का उद्देश्य केवल ऑपरेशन कराना नहीं, बल्कि समाज में यह संदेश देना है कि धर्म और सेवा एक-दूसरे के पूरक हैं। यह सेवा अभियान अमृत महोत्सव की स्थायी मानवीय पहचान बनेगा। जब किसी वृद्ध की आँखों में वर्षों बाद प्रकाश लौटेगा, जब कोई श्रमिक पुनः आत्मनिर्भर बनेगा और जब किसी परिवार के जीवन में नई आशा का सूर्योदय होगा, तभी अमृत महोत्सव का उद्देश्य वास्तविक रूप से सार्थक होगा। आइए, हम सभी सेवा का संकल्प लें और किसी जरूरतमंद के जीवन में प्रकाश का माध्यम बनें-यही सच्ची आराधना, यही श्रमण संस्कृति का संदेश और यही अमृत महोत्सव की आत्मा है।

राष्ट्रीय अहिंसा रैली

अहिंसा परमोधर्म : जन-जन तक महावीर का संदेश

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती, 2 अक्टूबर के पावन अवसर पर देशव्यापी "राष्ट्रीय अहिंसा रैली" का आयोजन किया जाएगा। यह केवल एक पदयात्रा या जनसमूह का आयोजन नहीं होगा, बल्कि भगवान महावीर के शाश्वत अहिंसा संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का राष्ट्रव्यापी जन-जागरण अभियान होगा। श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के तत्वावधान में देश के सभी 15 राज्यों, प्रांतीय इकाइयों एवं स्थानीय शाखाओं द्वारा एक ही दिन, एक ही उद्देश्य और एक ही संदेश के साथ हजारों नगरों एवं कस्बों में राष्ट्रीय अहिंसा रैलियाँ आयोजित की जाएँगी। संत-साध्वी भगवंतों के मंगल आशीर्वाद एवं समाज के विभिन्न वर्गों की सहभागिता से यह अभियान राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा, सद्भाव, संयम और मानवता का संदेश प्रसारित करेगा।

रैली में महिला शाखाएँ, युवा शाखाएँ, बाल संस्कार केन्द्र, विद्यार्थी, शिक्षण संस्थाएँ, सामाजिक संगठन, चिकित्सक, उद्योगपति, जनप्रतिनिधि तथा विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों को भी सहभागी बनाया जाएगा, जिससे यह अभियान सम्पूर्ण समाज का अभियान बन सके। सभी प्रतिभागी सफेद वेशभूषा, अमृत महोत्सव ध्वज, प्रेरक संदेश-पट्टिकाओं एवं अहिंसा के नारों के साथ अनुशासित स्वरूप में नगर के प्रमुख मार्गों से होकर गुजरेंगे।

रैली के दौरान "अहिंसा परमोधर्मः", "जियो और जीने दो", "व्यसनमुक्त भारत", "पर्यावरण संरक्षण", "जीवदया", "सद्भाव और समरसता" जैसे जन-जागरण संदेशों का व्यापक प्रचार किया जाएगा। विभिन्न स्थानों पर संक्षिप्त सभाएँ, शांति संदेश, सामूहिक नवकार मंत्र एवं अहिंसा संकल्प भी आयोजित किए जाएँगे। राष्ट्रीय अहिंसा रैली का उद्देश्य केवल समाज को जोड़ना नहीं, बल्कि नई पीढ़ी को भगवान महावीर के जीवन-दर्शन से जोड़ते हुए यह संदेश देना है कि अहिंसा केवल धार्मिक सिद्धांत नहीं, बल्कि मानवता, राष्ट्र निर्माण और विश्व शांति का सबसे प्रभावी मार्ग है। अमृत महोत्सव वर्ष की यह राष्ट्रीय अहिंसा रैली जैन समाज की एकता, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व का भव्य प्रदर्शन होगी।

जैन अनुसंधान केन्द्र की स्थापना

विरासत का संरक्षण-ज्ञान का संवर्धन-भविष्य का निर्माण

जिस समाज का इतिहास सुरक्षित रहता है, उसका भविष्य सदैव सशक्त होता है।

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष केवल उत्सवों की श्रृंखला नहीं, बल्कि श्रमण संस्कृति की गौरवशाली विरासत को संरक्षित कर भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने का एक ऐतिहासिक अवसर है। इसी उद्देश्य से श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा एक "जैन अनुसंधान केन्द्र" की स्थापना का संकल्प लिया गया है। यह केन्द्र श्रमण संघ के इतिहास, दर्शन, साहित्य, सेवा, संगठनात्मक विकास एवं सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण, अध्ययन और शोध का राष्ट्रीय केन्द्र बनेगा।

जैन अनुसंधान केन्द्र केवल एक पुस्तकालय या संग्रहालय नहीं होगा, बल्कि ज्ञान, शोध, प्रेरणा और इतिहास का जीवंत केन्द्र होगा। यहाँ श्रमण संघ की स्थापना से लेकर वर्तमान तक की गौरवशाली यात्रा को आधुनिक एवं व्यवस्थित स्वरूप में सुरक्षित किया जाएगा, जिससे विद्यार्थी, शोधार्थी, समाजजन तथा भावी पीढ़ियाँ अपनी विरासत को निकट से जान और समझ सकें।

इस केन्द्र का प्रमुख आकर्षण "श्रमण संघ प्रदर्शनी" होगी, जिसमें श्रमण संघ की ऐतिहासिक यात्रा, राष्ट्रीय अधिवेशन, संगठन निर्माण, प्रमुख उपलब्धियाँ, सेवा परियोजनाएँ, महिला एवं युवा शाखाओं का योगदान तथा अमृत महोत्सव की गतिविधियों को चित्रों, डिजिटल माध्यमों, समयरेखा (Timeline) एवं आधुनिक प्रदर्शनी तकनीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा। यह प्रदर्शनी प्रत्येक आगंतुक को श्रमण संघ की प्रेरणादायी यात्रा का जीवंत अनुभव कराएगी।

अनुसंधान केन्द्र में 'दुर्लभ दस्तावेजों एवं ऐतिहासिक अभिलेखों' का विशेष संरक्षण किया जाएगा। प्राचीन पत्र, पांडुलिपियाँ, स्मारिकाएँ, सम्मेलन अभिलेख, ऐतिहासिक पत्राचार, दुर्लभ छायाचित्र, समाचार पत्रों की कतरनें तथा संगठन से जुड़े महत्वपूर्ण दस्तावेजों का डिजिटलीकरण कर सुरक्षित रखा जाएगा, ताकि यह अमूल्य धरोहर आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव संरक्षित रहे। केन्द्र में 'आचार्य परम्परा दीर्घा' भी स्थापित की जाएगी, जिसमें श्रमण संघ की आचार्य परम्परा का विस्तृत परिचय, जीवन दर्शन, प्रेरक प्रसंग, साहित्यिक योगदान तथा समाज निर्माण में उनके अमूल्य कार्यों को आकर्षक एवं शोधपरक स्वरूप में प्रस्तुत किया जाएगा। यह दीर्घा श्रद्धा और प्रेरणा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बनेगी।

ज्ञान के संवर्धन के लिए एक समृद्ध 'जैन पुस्तकालय एवं डिजिटल लाइब्रेरी' का निर्माण किया जाएगा, जहाँ जैन दर्शन, आगम साहित्य, श्रमण संस्कृति, इतिहास, दर्शन, शोध ग्रन्थ, दुर्लभ प्रकाशन, पत्र-पत्रिकाएँ तथा आधुनिक शोध सामग्री उपलब्ध रहेगी। साथ ही डिजिटल माध्यम से देश-विदेश के शोधार्थियों को भी इस ज्ञान-संपदा का लाभ प्राप्त हो सकेगा। यह केन्द्र शोधार्थियों के लिए अध्ययन, संदर्भ एवं अनुसंधान का सशक्त मंच बनेगा। समय-समय पर शोध संगोष्ठियाँ, व्याख्यानमालाएँ, पुस्तक विमोचन, अभिलेख प्रदर्शनी, इतिहास परिचर्चाएँ तथा युवा शोध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा, जिससे नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत से गहराई से जुड़ सके।

जैन अनुसंधान केन्द्र अमृत महोत्सव वर्ष की एक ऐसी ऐतिहासिक उपलब्धि होगा, जो केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए नहीं, बल्कि आने वाली अनेक पीढ़ियों के लिए ज्ञान, प्रेरणा और गौरव का स्थायी स्रोत बनेगा। यह केन्द्र श्रमण संघ की अमूल्य विरासत को सुरक्षित रखते हुए भविष्य के इतिहास लेखन, शोध एवं समाज निर्माण की सुदृढ़ आधारशिला सिद्ध होगा।

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste
Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

75 वर्ष - 75 प्रेरक व्यक्तित्व सम्मान

प्रेरणा का अभिनंदन - सेवा का सम्मान

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के ऐतिहासिक अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा "75 वर्ष - 75 प्रेरक व्यक्तित्व सम्मान" का आयोजन किया जाएगा। इस विशेष सम्मान योजना का उद्देश्य उन विभूतियों का अभिनंदन करना है, जिन्होंने अपने तप, त्याग, ज्ञान, सेवा, नेतृत्व एवं समर्पण से समाज, संस्कृति और मानवता की उत्कृष्ट सेवा की है।

श्रमण संघ की 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा असंख्य प्रेरक व्यक्तित्वों के अथक पुरुषार्थ, दूरदृष्टि और समर्पण से समृद्ध हुई है। अनेक संत-साध्वी भगवंतों ने धर्म और संयम का प्रकाश फैलाया, समाजसेवियों ने सेवा की परम्परा को सशक्त बनाया, विद्वानों ने ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित की, चिकित्सकों ने मानव सेवा को अपना धर्म बनाया, महिला नेतृत्व ने समाज को नई दिशा दी तथा अनेक कर्मयोगियों ने मौन रहकर संगठन और समाज के विकास में अमूल्य योगदान दिया। अमृत महोत्सव वर्ष इन सभी प्रेरणा स्रोतों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का पावन अवसर है।

इस सम्मान योजना के अंतर्गत 'संत-साध्वी भगवंत, समाजसेवी, विद्वान, शिक्षाविद्, चिकित्सक, उद्योगपति, दानवीर, महिला नेतृत्व, युवा प्रेरणा, साहित्यकार, शोधकर्ता, पर्यावरण एवं जीवदया कार्यकर्ता तथा विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान देने वाली महान विभूतियों' का राष्ट्रीय स्तर पर चयन कर सम्मानित किया जाएगा।

सम्मानित व्यक्तित्वों का संक्षिप्त जीवन परिचय, उनके प्रेरणादायी कार्य एवं समाज निर्माण में उनके योगदान को 'जैन प्रकाश', स्मृति ग्रन्थ, आधिकारिक वेबसाइट एवं डिजिटल संग्रहालय के माध्यम से भी समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा, जिससे नई पीढ़ी को उत्कृष्ट जीवन मूल्यों से प्रेरणा प्राप्त हो सके। "75 वर्ष - 75 प्रेरक व्यक्तित्व सम्मान" केवल सम्मान समारोह नहीं, बल्कि सेवा, संस्कार, ज्ञान और समर्पण की उस महान परम्परा को नमन है, जिसने श्रमण संघ की गौरवगाथा को स्वर्णिम बनाया है। यह कार्यक्रम समाज के प्रेरणा स्रोतों को सम्मानित करते हुए आने वाली पीढ़ियों में आदर्श जीवन, सेवा भावना और संगठन के प्रति समर्पण का नया संकल्प जागृत करेगा।

एक शाखा - एक सेवा परियोजना

सेवा दिवस : समाज सेवा का राष्ट्रीय संकल्प

सेवा ही धर्म का सजीव स्वरूप है और समाज सेवा ही संगठन की सबसे बड़ी पहचान है। श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत सेवा की भावना को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा "एक शाखा - एक सेवा परियोजना" राष्ट्रीय अभियान प्रारम्भ किया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत देश की सभी '14 प्रांतीय शाखाएँ' अपने-अपने क्षेत्र में 'सेवा दिवस' के रूप में कम से कम एक स्थायी एवं जनोपयोगी सेवा परियोजना का संचालन करेंगी।

इस अभियान का उद्देश्य केवल एक दिवस का कार्यक्रम आयोजित करना नहीं, बल्कि प्रत्येक शाखा को अपने क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार ऐसी सेवा परियोजना से जोड़ना है, जिसका लाभ समाज को निरंतर प्राप्त होता रहे। प्रत्येक शाखा अपने क्षेत्र की परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा, चिकित्सा, छात्रवृत्ति, निःशुल्क नेत्र जाँच, रक्तदान, जीवदया, पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण, जल संरक्षण, दिव्यांग सहायता, महिला सशक्तिकरण, बेटी शिक्षा, कौशल विकास, अन्नदान अथवा अन्य जनकल्याणकारी परियोजनाओं में से किसी एक सेवा कार्य को अपनाएगी।

अमृत महोत्सव वर्ष में निर्धारित 'सेवा दिवस' पर सभी 14 प्रांतीय शाखाएँ एक साथ अपने-अपने सेवा कार्यों का शुभारम्भ या विस्तार करेंगी। इससे सम्पूर्ण देश में सेवा का एक सशक्त वातावरण निर्मित होगा तथा समाज के विभिन्न वर्गों को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होगा। प्रत्येक सेवा परियोजना का दस्तावेजीकरण कर उसकी जानकारी राष्ट्रीय स्तर पर संकलित की जाएगी, जिससे उत्कृष्ट कार्यों को अन्य शाखाओं तक भी पहुँचाया जा सके।

'एक शाखा - एक सेवा परियोजना' अभियान का मूल उद्देश्य यह है कि प्रत्येक शाखा अपनी पहचान केवल संगठनात्मक गतिविधियों से नहीं, बल्कि समाजोपयोगी सेवा कार्यों से भी स्थापित करे। अमृत महोत्सव वर्ष का यह अभियान सेवा, समर्पण और सामाजिक उत्तरदायित्व की उस परम्परा को और अधिक सशक्त बनाएगा, जिसने श्रमण संघ को सदैव जनकल्याण के मार्ग पर अग्रसर रखा है।

राष्ट्रव्यापी सामूहिक विवाह

सेवा, संस्कार, सामाजिक समरसता

विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों का संस्कारपूर्ण मिलन है। जब समाज इस पावन संस्कार का दायित्व साझा करता है, तब सेवा का वास्तविक स्वरूप प्रकट होता है।

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत सामाजिक समरसता, सादगीपूर्ण जीवन एवं जनकल्याण की भावना को सशक्त बनाने के उद्देश्य से राष्ट्रव्यापी सामूहिक विवाह का किया जा रहा है। इस महत्त्वपूर्ण अभियान का संचालन जन कल्याण योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन एवं कार्यक्रम संयोजक श्री सुदर्शन जैन के मार्गदर्शन में किया जाएगा।

इस योजना का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर एवं जरूरतमंद परिवारों को सम्मानजनक, संस्कारपूर्ण एवं सादगीपूर्ण विवाह की व्यवस्था उपलब्ध कराना है। साथ ही समाज में बढ़ते वैवाहिक खर्चों को कम करने, सामाजिक सहयोग की भावना को सुदृढ़करने तथा आदर्श एवं संस्कारित वैवाहिक परम्पराओं को प्रोत्साहित करना भी इस अभियान का प्रमुख लक्ष्य है।

अमृत महोत्सव वर्ष के दौरान देश के विभिन्न राज्यों एवं प्रांतीय शाखाओं के सहयोग से सामूहिक विवाह समारोह आयोजित कर इन आयोजनों में योग्य वर-वधुओं का सामाजिक एवं धार्मिक परम्पराओं के अनुरूप विवाह सम्पन्न कराया जाएगा। समाज के दानदाताओं के सहयोग से नवदंपत्तियों को आवश्यक गृहस्थी सामग्री एवं मंगल आशीर्वाद प्रदान किए जाएंगे।

सामूहिक विवाह के माध्यम से समाज में सादगी, सद्भाव और संस्कारों का संदेश प्रसारित होगा तथा अनेक परिवार आर्थिक बोझ से मुक्त होकर अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

500 से अधिक आत्म-ध्यान शिविरों का आयोजन

आत्म-जागरण का राष्ट्रव्यापी अभियान

"जब मन आत्मा से जुड़ता है, तभी जीवन में शांति, संयम और समता का वास्तविक अनुभव होता है।" श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत आत्मिक जागरण एवं आध्यात्मिक साधना को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से '500 से अधिक आत्म-ध्यान शिविरों' के आयोजन का संकल्प लिया गया है। इस राष्ट्रव्यापी अभियान का शुभारम्भ 'पूज्य आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज के पावन जन्मोत्सव' के अवसर पर किया जाएगा। यह अभियान 'आत्म-ध्यान योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जी जैन' के कुशल मार्गदर्शन में संचालित होगा।

उल्लेखनीय है कि गत वर्ष इस अभियान के अंतर्गत 'देशभर के 100 से अधिक स्थानों' पर आत्म-ध्यान शिविर सफलतापूर्वक आयोजित किए गए थे, जिनमें हजारों साधकों ने सहभागिता कर आत्म-ध्यान, आत्मचिंतन एवं सकारात्मक जीवन - दृष्टि का अनुभव प्राप्त किया। समाज से प्राप्त उत्साहजनक प्रतिसाद को देखते हुए इस वर्ष इसे और अधिक व्यापक स्वरूप प्रदान करते हुए 500 से अधिक शिविर आयोजित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

इन शिविरों में ध्यान, आत्मनिरीक्षण, भाव - परिवर्तन, मानसिक संतुलन, तनावमुक्त जीवन, सकारात्मक चिंतन तथा भगवान महावीर के समता एवं आत्म-जागरण के संदेश पर आधारित व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। विशेष रूप से युवा, विद्यार्थी, महिलाएँ, परिवार एवं समाज के सभी वर्गों को इस अभियान से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। देश-विदेश में आयोजित होने वाला यह ऑनलाईन आत्म-ध्यान शिविर केवल ध्यान सीखने का माध्यम नहीं होंगे, बल्कि आत्मपरिवर्तन, संस्कार जागरण और आध्यात्मिक उन्नयन का व्यापक जनआंदोलन बनेंगे। अमृत महोत्सव वर्ष का यह अभियान प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर की शक्ति से परिचित कराते हुए आत्मकल्याण से लोककल्याण की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देगा।

विशेष डाक टिकट एवं स्मृति सिक्का

राष्ट्रीय गौरव की ऐतिहासिक पहल

जब किसी संस्था का योगदान राष्ट्र की स्मृतियों में अंकित होता है, तब उसका इतिहास आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बन जाता है।

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के ऐतिहासिक अवसर पर भारत सरकार के समक्ष "श्रमण संघीय अमृत महोत्सव" के विशेष स्मारक डाक टिकट एवं स्मृति सिक्का जारी करना प्रस्तावित है। इस महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पहल के कार्यक्रम संयोजक जन कल्याण योजना के राष्ट्रीय वाइस चेयरमैन श्री संजय जैन-अरिहंत नगर को बनाया गया है, जो इस योजना के समन्वय एवं क्रियान्वयन का दायित्व निभाएँगे।

इस पहल का उद्देश्य केवल एक स्मारक डाक टिकट अथवा सिक्का प्राप्त करना नहीं, बल्कि श्रमण संघ की 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा, जैन दर्शन के शाश्वत सिद्धांतों तथा सेवा, संयम, अहिंसा और सामाजिक समरसता के संदेश को राष्ट्रीय पहचान मिलना सम्पूर्ण जैन समाज के लिए गर्व और सम्मान का ऐतिहासिक अवसर होगा।

प्रस्तावित विशेष डाक टिकट पर अमृत महोत्सव का आधिकारिक प्रतीक, श्रमण संस्कृति के मूल मूल्य तथा भारतीय आध्यात्मिक विरासत का कलात्मक स्वरूप प्रदर्शित करने का प्रयास किया जाएगा। इसी प्रकार स्मृति सिक्का श्रमण संघ की ऐतिहासिक यात्रा का स्थायी प्रतीक बनकर आने वाली पीढ़ियों को इस गौरवशाली विरासत का स्मरण कराएगा।

इन दोनों स्मृति प्रतीकों के माध्यम से श्रमण संघ का परिचय देश-विदेश तक पहुँचेगा तथा जैन दर्शन के सार्वभौमिक संदेश अहिंसा, करुणा, संयम और सेवा का व्यापक प्रचार-प्रसार होगा। साथ ही यह पहल संगठन की ऐतिहासिक उपलब्धियों को राष्ट्रीय अभिलेखों में प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी।

J. P. Jain Foundation
(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)
सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन
चेयरमैन

अभय जैन
महामंत्री

अतुल जैन
कोषाध्यक्ष

अमित जैन
- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।
MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

विजन 2052 : श्रमण संघ 2027 से 2052 तक का स्वर्णिम लक्ष्य

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में 'विजन **2052**' का प्रारूप तैयार किया जा रहा है। इसका उद्देश्य श्रमण संघ की स्थापना वर्ष **1952** से आगामी शताब्दी वर्ष **2052** तक की विकास यात्रा का स्पष्ट रोडमैप तैयार करना है, जिससे संगठन अगले 25 वर्षों में नई ऊँचाइयों को प्राप्त कर सके।

विजन 2052 के अंतर्गत धर्म, शिक्षा, सेवा, संस्कार, महिला एवं युवा सशक्तिकरण, डिजिटल तकनीक, जैन अनुसंधान, पर्यावरण संरक्षण, जीवदया, संगठन विस्तार तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रमण संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए दीर्घकालीन लक्ष्य निर्धारित किए जाएंगे। इसका उद्देश्य केवल वर्तमान गतिविधियों का विस्तार नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सशक्त, संगठित, आधुनिक एवं संस्कारित श्रमण संघ का निर्माण करना है।

अमृत महोत्सव वर्ष में देशभर के संत-साध्वी भगवंतों, विद्वानों, समाज के वरिष्ठजनों, युवाओं एवं विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर इस विजन दस्तावेज को अंतिम रूप दिया जाएगा। यह दस्तावेज शताब्दी वर्ष 2052 तक संगठन की दिशा, प्राथमिकताओं और राष्ट्रीय कार्ययोजना का मार्गदर्शक बनेगा।

विजन 2052 केवल एक योजना नहीं, बल्कि श्रमण संघ के उज्ज्वल भविष्य का सामूहिक संकल्प है, जो 1952 की गौरवशाली विरासत को आगे बढ़ाते हुए 2052 के स्वर्णिम शताब्दी वर्ष तक संगठन को नई पहचान और नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का आधार बनेगा।

राष्ट्रीय अमृत महोत्सव कलश यात्रा

श्रद्धा-संस्कार-संघीय एकता का राष्ट्रीय मंगल अभियान

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष पर देशभर में "राष्ट्रीय अमृत महोत्सव कलश यात्रा" का आयोजन किया जाएगा। यह यात्रा केवल धार्मिक परम्परा का निर्वहन नहीं, बल्कि श्रमण संस्कृति, संघीय एकता, अहिंसा, सेवा एवं संस्कारों के राष्ट्रीय संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का प्रेरणादायी अभियान होगी।

संत-साध्वी भगवंतों के मंगल सान्निध्य एवं आशीर्वाद में आयोजित इस कलश यात्रा में समाज की महिलाएँ पारम्परिक वेशभूषा में मंगल कलश धारण कर सहभागिता करेंगी। यात्रा भगवान महावीर एवं गुरु भगवंतों के जयघोष, नवकार मंत्र, मंगल गीतों एवं अमृत महोत्सव के प्रेरक संदेशों के साथ नगर के प्रमुख मार्गों से होकर निकलेगी।

कलश यात्रा में अमृत महोत्सव का ध्वज, आधिकारिक लोगो, प्रेरक झाँकियाँ, भगवान महावीर के अहिंसा संदेश, श्रमण संघ की गौरवगाथा तथा वर्षभर आयोजित होने वाले प्रमुख कार्यक्रमों का आकर्षक प्रदर्शन किया जाएगा। महिला शाखाएँ, युवा शाखाएँ, बाल संस्कार केन्द्र, विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ एवं समाज के सभी वर्ग इस यात्रा में उत्साहपूर्वक सहभागी बनेंगे।

यात्रा के समापन पर धर्मसभा का आयोजन होगा, जिसमें अमृत महोत्सव वर्ष के उद्देश्यों, राष्ट्रीय कार्यक्रमों एवं समाज की सहभागिता पर प्रकाश डाला जाएगा। सभी उपस्थितजन अमृत महोत्सव वर्ष को सफल बनाने तथा धर्म, सेवा, संस्कार एवं संगठन के कार्यों में सक्रिय योगदान देने का सामूहिक संकल्प भी लेंगे।

राष्ट्रीय अमृत महोत्सव कलश यात्रा का उद्देश्य समाज को जोड़ना, नई पीढ़ी को श्रमण संस्कृति से परिचित कराना तथा अमृत महोत्सव वर्ष को जन-जन का महोत्सव बनाना है। यह यात्रा श्रद्धा, अनुशासन और संघीय एकता का ऐसा प्रेरक दृश्य प्रस्तुत करेगी, जो अमृत महोत्सव वर्ष की अविस्मरणीय पहचान बनेगा।

अमृत महोत्सव प्रेरक फिल्म : 75 वर्षों की गौरवगाथा

इतिहास केवल पढ़ा नहीं जाता, जब उसे जीवंत रूप में देखा जाता है, तब वह पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बन जाता है। श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के ऐतिहासिक अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा '75 वर्षों की गौरवगाथा' विषय पर एक विशेष 'अमृत महोत्सव प्रेरक फिल्म' का निर्माण किया जा रहा है। यह फिल्म केवल एक डॉक्यूमेंट्री नहीं होगी, बल्कि श्रमण संघ की स्थापना से लेकर अमृत महोत्सव तक की प्रेरणादायी यात्रा, आध्यात्मिक विरासत, संगठनात्मक विकास, सेवा कार्यों और भविष्य की दिशा का एक सशक्त दृश्य दस्तावेज होगी।

इस प्रेरक फिल्म में श्रमण संघ की स्थापना की पृष्ठभूमि, संघ निर्माण की प्रेरणादायी यात्रा, पूज्य आचार्य भगवंतों का मार्गदर्शन, आचार्य परम्परा का गौरव, राष्ट्रीय अधिवेशनों की ऐतिहासिक झलकियाँ, संगठन की उपलब्धियाँ, महिला एवं युवा शाखाओं का योगदान, शिक्षा, चिकित्सा, जीवदया, पर्यावरण, सामाजिक सेवा तथा जनकल्याण के विविध आयामों को प्रभावशाली दृश्य एवं भावपूर्ण प्रस्तुति के माध्यम से प्रदर्शित किया जाएगा।

विशेष आकर्षण के रूप में इस फिल्म में दुर्लभ छायाचित्र, ऐतिहासिक दस्तावेज, पुराने वीडियो, प्रेरक संस्मरण, वरिष्ठ समाजसेवियों के अनुभव, संत-साध्वी भगवंतों के संदेश तथा विभिन्न राज्यों में संचालित सेवा एवं संगठनात्मक गतिविधियों की जीवंत झलकियाँ सम्मिलित की जाएँगी। आधुनिक सिनेमाई तकनीक, उच्च गुणवत्ता वाले दृश्य, संगीत एवं कथावाचन के माध्यम से यह फिल्म श्रमण संघ की गौरवगाथा को भावनात्मक एवं प्रेरक स्वरूप प्रदान करेगी।

इस फिल्म का उद्देश्य केवल अतीत का स्मरण कराना नहीं, बल्कि वर्तमान को प्रेरित करना और भविष्य को दिशा देना है। जब नई पीढ़ी श्रमण संघ की 75 वर्षों की तप, त्याग, सेवा, संगठन और संस्कार की यात्रा को देखेगी, तब उसके मन में समाज के प्रति गौरव, उत्तरदायित्व और समर्पण की भावना और अधिक प्रबल होगी।'75 वर्षों की गौरवगाथा' केवल एक प्रेरक फिल्म नहीं, बल्कि श्रमण संघ की जीवंत आत्मकथा होगी-जो इतिहास को दृश्य रूप में संरक्षित करेगी, वर्तमान को प्रेरित करेगी और आने वाली पीढ़ियों को अपनी गौरवशाली विरासत से सदैव जोड़े रखेगी।

अमृत महोत्सव वर्ष में राष्ट्रीय स्तर पर सामूहिक जैन भागवती दीक्षा महोत्सव का ऐतिहासिक आयोजन

'संयम ही जीवन का सर्वोच्च सौन्दर्य है और दीक्षा आत्मकल्याण की दिव्य यात्रा का शुभारम्भ।'

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के पावन अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा एक ऐतिहासिक एवं अभूतपूर्व राष्ट्रीय आयोजन का भाव व्यक्त किया गया है। श्रमण संघीय आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज की पावन आज्ञा एवं मंगल प्रेरणा में विचरण करने वाले पूज्य संत-साध्वी भगवंतों के नेश्रायी वैरागी एवं वैरागन बहनों की सामूहिक जैन भागवती दीक्षा का आयोजन देश के सभी प्रान्तों में एक ही तिथि पर राष्ट्रीय स्तर पर सम्पन्न करने की योजना बनाई जा रही है।

यह आयोजन केवल दीक्षा समारोह नहीं होगा, बल्कि श्रमण संस्कृति, वैराग्य, संयम और आत्मकल्याण की दिव्य परम्परा के व्यापक प्रचार-प्रसार का राष्ट्रीय अभियान बनेगा। अमृत महोत्सव वर्ष में एक ही दिन सम्पूर्ण देश के विभिन्न प्रान्तों में होने वाली यह सामूहिक भागवती दीक्षा श्रमण संघ के इतिहास में एक नई गौरवगाथा का सृजन करेगी।

दीक्षा जैन परम्परा का सर्वोच्च संस्कार है, जहाँ आत्मा सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर तप, त्याग, संयम और साधना के पथ पर अग्रसर होती है। ऐसे महान अवसर पर वैरागी एवं वैरागन बहनों का संयम जीवन में प्रवेश करना सम्पूर्ण समाज के लिए प्रेरणा, श्रद्धा और आध्यात्मिक जागरण का विषय होगा।

इस राष्ट्रीय आयोजन में प्रत्येक प्रान्त में स्थानीय आयोजन समितियों का गठन किया जाएगा। पूज्य संत-साध्वी भगवंतों के सान्निध्य में धार्मिक सभाएँ, मंगल प्रवचन, गुरु वंदना, वैराग्य प्रेरणा कार्यक्रम तथा दीक्षा महोत्सव अत्यंत श्रद्धा, अनुशासन एवं गरिमा के साथ सम्पन्न होंगे। देशभर के श्रावक-श्राविकाओं को भी इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बनने एवं संयम संस्कृति के प्रचार में सहभागी बनने का अवसर प्राप्त होगा।

अमृत महोत्सव वर्ष का यह राष्ट्रीय दीक्षा महोत्सव समाज को यह संदेश देगा कि श्रमण परम्परा आज भी जीवंत है, संयम की धारा अविरल प्रवाहित हो रही है और नई पीढ़ी धर्म, तप एवं त्याग के पथ को अपनाने के लिए प्रेरित हो रही है। यह आयोजन आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का अमूल्य स्रोत सिद्ध होगा तथा श्रमण संघ की आध्यात्मिक विरासत को और अधिक सशक्त बनाएगा।

आइए, अमृत महोत्सव वर्ष में हम सभी इस ऐतिहासिक राष्ट्रीय आयोजन के सहभागी बनें और संयम, साधना एवं आत्मकल्याण की इस दिव्य परम्परा को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लें।

प्रवर्तक श्री सुकनमुनि जी के स्वास्थ्य संबंधी समाचार

जैतारण (राजस्थान) : हमारे आराध्य, मरुधरा भूषण, शासन गौरव, संत शिरोमणि, वरिष्ठ प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री सुकन मुनि जी म. तथा युवा प्रणेता पूज्य श्री महेश मुनि जी म., अहमदाबाद स्थित राजस्थान हॉस्पिटल में लगभग एक सप्ताह तक उपचार प्राप्त करने के पश्चात अब पूर्णतः स्वस्थ होकर पावन धाम, जैतारण पधार चुके हैं। गुरुदेव की असीम कृपा से दोनों गुरु भगवंतों का स्वास्थ्य अब काफी बेहतर है तथा वे निरंतर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

सभी गुरु-भक्तों से विनम्र निवेदन है कि अपनी सुविधानुसार पावन धाम पधारकर गुरु भगवंतों के दर्शन एवं वंदन का पुण्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से मंगलकामना है कि गुरुदेव की कृपा एवं आशीर्वाद हम सभी पर सदैव बना रहे तथा उनका स्वास्थ्य सदैव उत्तम एवं निरोगी रहे।

प्रेषक : श्री मरुधर केसरी स्थानकवासी जैन यादगार समिति ट्रस्ट-पावनधाम, जैतारण

जैन कॉन्फ्रेंस मुख्यालय जैन भवन में श्रमण संघीय साधु-साध्वियों के पावन सान्निध्य में अमृत महोत्सव धर्म जागरण समारोह सम्पन्न

नई दिल्ली : रविवार, दिनांक 12 जुलाई को जैन भवन में उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज एवं महाश्रमण उप-प्रवर्तक पू. श्री आनंदमुनि जी म. आदि ठाणा, कठोर अभिग्रहधारी पू. श्री राजेशमुनि जी म. आदि ठाणा एवं पंजाब वीरांगना महासाध्वी पू. श्री किरण जी म. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 'श्रमण संघीय अमृत महोत्सव धर्म जागरण समारोह' श्रद्धा, उत्साह एवं आध्यात्मिक वातावरण के मध्य सम्पन्न हुआ। समारोह का उद्देश्य अमृत महोत्सव वर्ष को केवल आयोजनों तक सीमित न रखते हुए उसे धर्म, सेवा, संस्कार एवं संगठन के व्यापक जन-आंदोलन के रूप में स्थापित करना था।

इस अवसर पर अमृत महोत्सव वर्ष के दौरान देशभर में आयोजित किए जाने वाले विविध धार्मिक, सामाजिक, सेवा, संस्कार, महिला, युवा, शोध, प्रकाशन एवं जनजागरण कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा समाज के समक्ष प्रस्तुत की गई। वर्षभर संचालित होने वाले प्रत्येक कार्यक्रम के उद्देश्य, स्वरूप एवं समाज की सहभागिता पर विस्तार से चर्चा करते हुए सभी से सक्रिय सहयोग का आह्वान किया गया।

पूज्य उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज ने अपने प्रेरक उद्बोधन में धर्म को जीवन का आचरण बनाने, संगठन की एकता को सुदृढ़ करने तथा सेवा एवं संस्कारों को समाज की जीवनशैली बनाने का संदेश प्रदान किया। उन्होंने कहा कि अमृत महोत्सव तभी सार्थक होगा जब उसका प्रत्येक कार्यक्रम समाज में स्थायी सकारात्मक परिवर्तन का आधार बने।

समारोह के अंत में उपस्थित सभी श्रद्धालुओं, पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने अमृत महोत्सव वर्ष के प्रत्येक कार्यक्रम को सफल बनाने, समाज के अधिकाधिक परिवारों को जोड़ने तथा श्रमण संस्कृति के शाश्वत संदेश-अहिंसा, संयम, सेवा और समरसता-को जन-जन तक पहुँचाने का सामूहिक संकल्प लिया। श्रद्धा, उत्साह और नवसंकल्प से परिपूर्ण यह धर्म जागरण समारोह अमृत महोत्सव वर्ष की राष्ट्रीय गतिविधियों के लिए एक प्रेरणादायी आधार सिद्ध हुआ।

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

श्रीमती चंचलाबाई छाजेड जैन का पंडित मरण

बुलढ़ाणा (महाराष्ट्र) : बुलढाणा जैन श्री संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष, संथारा साधक स्वर्गीय श्रीमान प्रेमचंदजी चंदनमलजी छाजेड की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती चंचलाबाई प्रेमचंदजी छाजेड 76 वर्ष की उम्र में 08 जुलाई को 18वें दिन संथारा पंडित मरण प्राप्त हुआ।

प्रेषक : छाजेड परिवार

श्री हेमंत सुभाषलाल सांखला जैन की संथाराव्रत पूर्णाहुति

जुन्नर (महाराष्ट्र) : श्री हेमंत सुभाषलालजी साखला (उम्र 54 वर्ष) को 7 उपवास के पश्चात 08/07/2026 के दिन आजीवन संलेखना संथारा व्रत के प्रत्याख्यान दिए थे, जिसके बाद उनके संथाराव्रत की पूर्णाहुति हुई।

प्रेषक : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जुन्नर

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

पूज्य प्रवर्तक श्री रतनमुनि जी म. की 78वीं दीक्षा जयंती का हुआ आयोजन

चारोदा (छत्तीसगढ़) : श्री मंगल साधना केंद्र, मंगलम चरोदा में शुक्रवार को पूज्य गुरुदेव छत्तीसगढ़ प्रवर्तक पू. श्री रतनमुनि जी म. की 78वीं दीक्षा जयंती श्रद्धा और भक्ति के साथ गुणानुवाद सभा के रूप में मनाई गई। कार्यक्रम नेपाल केसरी, मानव मिलन संस्थापक डॉ. श्री मणिभद्र मुनि जी म. (ठाणा-3) के सान्निध्य में आयोजित हुआ। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के विभिन्न जैन संघों और बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर गुरुदेव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को याद किया।

वक्ताओं ने बताया कि धर्म प्रभावना में उनके अतुलनीय योगदान के लिए विभिन्न जैन संघों ने उन्हें विदर्भ केसरी, लोकमान्य संत, वाणीभूषण, छत्तीसगढ़ प्रवर्तक, परम स्थविर और नवकार साधक जैसी सम्मानित उपाधियों से अलंकृत किया। श्रद्धालुओं के बीच वे 'भोले बाबा' और 'छत्तीसगढ़ के भगवान' के नाम से भी लोकप्रिय रहे। दीक्षा जयंती समारोह में भिलाई, दुर्ग, अहीवारा, चरोदा, नेहरू नगर, रायपुर सहित विभिन्न क्षेत्रों से आए जैन समाज के प्रतिनिधियों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए और गुरुदेव के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। कार्यक्रम के पश्चात श्री मंगल साधना केंद्र मंगलम ट्रस्ट की ओर से उपस्थित श्रद्धालुओं के लिए स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई।

मैसूर पांजरापोल गौशाला में सेवा कार्य

मैसूर (कर्नाटक) : श्रमण संघीय मंत्री प्रवर पू. श्री कमलमुनि जी 'कमलेश' ने मैसूर गौशाला में स्थानीय श्रीसंघ कार्यकाताओं के जीवन दया के सेवा कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा गाय माता प्रकृति का प्राण आर्थिकता के लिए कुबेर का भंडार स्वास्थ्य के लिए रामबाण औषधि संस्कृति की रक्षा के लिए ऑक्सीजन से महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि एक गाय माता की सेवा करना पाँच मंदिर बनने से बड़ा लाभ है। हिंदुस्तान में लाखों मंदिर है एक-एक मंदिर 50 और 100 गाय माता का पालन करें तो एक भी कत्लखाने में नहीं जाएगी आंदोलन से नहीं पालन से बचेगी।

पशु बचेगा तो संस्कृति संस्कार अहिंसा और धर्म की भावना की रक्षा होगी। गौशाला में 5000 गौवंश है, इसको रिसर्च सेंटर बनाने का सुझाव दिया। संस्था के अध्यक्ष सुमतिलाल पगारिया, मंत्री विनोद खाबिया कोषाध्यक्ष अशोक धोका, सहमंत्री सुरेंद्र कुमार जैन, सुशील चोरसिया, विमल मुथा ने राष्ट्रसंत कमलमुनि जी एवं तपस्वी घनश्याम जी का अगवानी अभिनंदन किया।

राजस्थान सिंहनी पू. श्री प्रेमवती जी म. का 26वाँ पुण्यतिथि समारोह हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

कोशिथल (राजस्थान) : प्रवचन भूषण, राष्ट्र ज्योति, राजस्थान सिंहनी सद्गुरुणी प्रेमवतीजी म. का 26वाँ पुण्यतिथि समारोह प्रेम सज्जन साधना कोशिथल के तत्वावधान आयम्बिल तप एवं सामूहिक सामायिक साधना के साथ मनाया गया। उपप्रवर्तिनी तप ज्योति श्री विजयप्रभाजी महाराज द्वारा महामंत्र नवकार स्तुति एवं प्रार्थना से समारोह का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण वरिष्ठ स्वाध्यायी प्रमिलाजी सूर्या ने किया।

साध्वी जयश्री जी ने कहा कि उनके जीवन की अनेक चमत्कारिक घटनाएँ आज भी जन मानस को रोमांचित करती हैं जो सिद्ध साधना की फलश्रुति है। साध्वीजी आर्याजी ने भावविभोर गीतिका ने प्रस्तुत की। साध्वी हर्षश्रीजी महाराज ने पूज्य गुरुणी मैया की स्मृति में ध्यान कराया। प्रेम सज्जन साधना संस्थान के अध्यक्ष सुरेश सूर्या ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया। युवा रत्न से सम्मानित विनोदजी सूर्या ने ओजस्वी वाणी में गुरुणी गुणगान किया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस व मेवाड़ संघ परम्परा की संस्थाओं व कई श्रीसंघ के पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयुक्त रूप में संचालन विनोद सूर्या एवं सुरेन्द्र आँचलिया ने किया आभार व धन्यवाद भगवतीलाल जी सूर्या ने व्यक्त किया।

जैन कॉन्फ्रेंस के आजीवन सदस्यों के लिये विशेष सूचना

श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त आजीवन सदस्यों को सूचनार्थ निवेदन है कि आप आपना नाम, पता, फोटो, मोबाईल नंबर, ई-मेल, आधार कार्ड आदि जानकारी नीचे दिए गए लिंक पर जाकर अपडेट कर सकते हैं। यह लिंक एकदम सुरक्षित है, यह जानकारी आप अपने मित्रों, परिवारजनों आदि को भी शेयर कर हमारा सहयोग कर सकते हैं।

Link - https://jainconference.org/MemberRegistration.aspx – सम्पादकीय टीम

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 15-07-2026
Date of Posting : 21/22-07-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ❊ अंक : 19 ❊ पृष्ठ : 8
माह : जुलाई ❊ सप्ताह : 15 जुलाई से 21 जुलाई

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुगड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन परंपरा के दुर्लभ दस्तावेज श्रृंखला...

स्थानकवासी जैन परंपरा की प्राचीनता का साक्षी एक विलक्षण सचित्र पांडुलिपि-चित्र

– मोनिका जैन 'दीदी' एम.ए.

उत्तर-मध्यकालीन जैन लघुचित्र परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रतीत होती है। गहरे हरे और लाल रंगों का संतुलित प्रयोग, सीमित किन्तु प्रभावशाली रंग योजना, स्पष्ट रेखांकन, वृक्षों, पर्वतीय गुफा तथा वन्यजीवों का प्रतीकात्मक अंकन, और पात्रों के बड़े नेत्र तथा पारंपरिक मुखाकृतियाँ इसकी प्रमुख

लगभग ढ़ाई सौ वर्ष पूर्व निर्मित 'अरिष्ठनेमी चरित्र' की यह सचित्र पांडुलिपि भारतीय जैन चित्रकला, साहित्य और स्थानकवासी जैन परंपरा के इतिहास का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं दुर्लभ दस्तावेज है। वर्तमान में यह संपूर्ण 24 चित्रों से युक्त पांडुलिपि शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत के संग्रह में सुरक्षित है। इसमें भगवान अरिष्टनेमि (नेमिनाथ) के जीवन - प्रसंगों को अत्यंत प्रभावशाली चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।

प्रस्तुत चित्र में भगवान नेमिनाथ के अनुज रथनेमि तथा साध्वी राजीमती का प्रसिद्ध प्रसंग चित्रित है। कथा के अनुसार, घोर वर्षा के समय साध्वी राजीमती आश्रय की खोज में एक गुफा में पहुँचती हैं, जहाँ दीक्षित मुनि रथनेमि पहले से विराजमान होते हैं। दुर्भाग्यवश रथनेमि क्षणिक कामविकार से विचलित होकर साध्वी राजीमती के समक्ष अनुचित प्रस्ताव रखते हैं। किन्तु राजीमती अपनी अद्वितीय संयमशीलता, आत्मबल और वैराग्यपूर्ण वाणी से उन्हें कठोर धिक्कार देती हैं। उनके उपदेश से रथनेमि का अंतःकरण जागृत होता है और वे पुनः अपने संयम मार्ग पर दृढ़ हो जाते हैं। यह प्रसंग जैन साहित्य में संयम की विजय और इन्द्रिय-निग्रह का अनुपम उदाहरण माना जाता है।

चित्रशैली की दृष्टि से यह पांडुलिपि पश्चिमी भारत की विशेषताएँ हैं। चित्र में कथा के विभिन्न चरणों को एक ही फ्रेम में क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया गया है, जो भारतीय कथात्मक चित्रकला की विशिष्ट शैली को दर्शाता है।

इस चित्र का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसमें स्थानकवासी जैन साधु-साध्वियों को उनके विशिष्ट मुखवस्त्रिका (मुँहपट्टी) सहित चित्रित किया गया है। यह तथ्य स्थानकवासी साधु परंपरा की ऐतिहासिक प्राचीनता का सशक्त दृश्य प्रमाण प्रस्तुत करता है। साथ ही यह भी स्पष्ट करता है कि लगभग ढ़ाई शताब्दी पूर्व स्थानकवासी समाज में धार्मिक साहित्य, चित्रकला तथा पांडुलिपियों के संरक्षण और अध्ययन के प्रति गहरी रुचि विद्यमान थी। सामान्यतः स्थानकवासी परंपरा को केवल वाचिक और साहित्यिक परंपरा तक सीमित मानने की धारणा इस प्रकार की सचित्र पांडुलिपियाँ चुनौती देती हैं।

यह दुर्लभ चित्र न केवल एक धार्मिक कथा का कलात्मक निरूपण है, बल्कि स्थानकवासी जैन समाज की सांस्कृतिक चेतना, साहित्यिक अभिरुचि, चित्रकला संरक्षण और ऐतिहासिक निरंतरता का भी एक अमूल्य साक्ष्य है। जैन कला और इतिहास के शोधकर्ताओं के लिए यह पांडुलिपि भविष्य के अध्ययन की नई संभावनाएँ खोलती है तथा स्थानकवासी परंपरा की विरासत को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत सिद्ध होती है।

जैन गौरव

सेठ बालचन्द हीराचन्द दोशी जैन

सेठ बालचन्द हीराचन्द दोशी जैन भारत के उद्योग जगत और नये प्रकल्पों की नींव आपने ही रखी थी। बालचन्द नगर इंडस्ट्रीज लिमिटेड के मुख्य संस्थापक थे। आप एक देशभक्त और दूरदृष्टि रखने वाले उद्योगपति थे।

आपने हिन्दुस्तान कन्स्ट्रक्शन कम्पनी (एच.सी.सी. की 1926 में तथा रावलगांव शुगर फैक्ट्री 1933 में स्थापना की तथा आपके द्वारा ही हिन्दुस्तान एयरक्राफ्ट कम्पनी की शुरुआत बेंगलोर में की। जो वर्तमान में हिन्दुस्तान एअरोनोटिक्स लिमिटेड (एच.ए.एल के नाम से जानी जाती है।

विशाखापत्तनम में जहाज बनाने का कारखाना हिन्दुस्तान शिपयार्ड की स्थापना भी आपके द्वारा की गई। भारत में सबसे पहला पैसेंजर कार बनाने का कारखाना प्रीमियर आटो मोबाइल्स सन् 1944 में मुम्बई में स्थापित किया गया।

बालचन्द नगर के आस-पास की जमीन को आपने सुव्यवस्थित कर उस पर खेती करके गन्ने के खेतों में बदल दिया, वहाँ पर शुगर फैक्टी की शुरुआत की सिंदिया स्टीम नेव्हीगेशन कम्पनी की भी स्थापना की गई।

बालचन्द्र नगर इंडस्ट्रीज लिमिटेड, इंडस्ट्रीयल मशीनरी डिव्हीजन का निम्नलिखित क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान है- स्वनिर्मित शुगर फैक्ट्री, शुगर मशीनरी का निर्यात, नौ सेना के जहाजों का गिअर बॉक्स, स्वनिर्मित सीमेंट फैक्ट्री, अणु ऊर्जा प्रकल्प के महत्वपूर्ण हिस्से, आकाशयान, प्रक्षेपणास्त्र के पार्ट्स, पनडुब्बी के महत्वपूर्ण पार्ट्स, ऑप्टीकल्स टेलीस्कोप आदि।

आप भारत सरकार, संरक्षण मंत्रालय की तरफ से देश के प्रति सेवा के कारण कई बार सम्मिलित हुये। आज भी आपके द्वारा स्थापित कम्पनियाँ देश व समाज के विकास में योगदान दे रही हैं। भारत सरकार द्वारा 23-11-2004 में प्रसिद्ध जैन उद्योगपति बालचन्द हीराचन्द दोशी के नाम पर डाक टिकट जारी किया गया।

श्रमण संघीय जैन पर्व

दिनांक 18 जुलाई : आचार्य श्री आत्माराम जी म. - दीक्षा जयंति
दिनांक 19 जुलाई : प्रधानाचार्य श्री सोहनलाल जी म. - स्मृति दिवस
दिनांक 22 जुलाई : अभिग्रहधारक श्री वेणीचंद जी म. - दीक्षा दिवस
दिनांक 29 जुलाई : जैन चातुर्मास प्रारंभ

लौकिक एवं राष्ट्रीय पर्व

दिनांक 12 जुलाई : पद्मभूषण पं. दलसुख मालवणिया जन्म दिवस
दिनांक 25 जुलाई : देवशयनी एकादशी
दिनांक 29 जुलाई : गुरु पूर्णिमा

कविता का कोना

दीवार

अंधेरे और उजाले के बीच किसी बात को लेकर ठन गई...
उजाले ने साफ साफ कह दिया...
मेरे सामने तेरा कोई अस्तित्व नहीं!
अंधेरे ने कुटिल हंसी हंसते हुए कहा...
माना कि मैं तुम्हारा सामना नहीं कर सकता
किन्तु जब तक दीवार की ओट रहेगी,
तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकोगे!
हवाओं ने सबको बताया-सम्मुख न सही
किन्तु दीवार की ओट में अंधेरा उजाले से जीत गया!

- ओम समदर्शी, कुरड़ायां-उदयपुर

श्रमणसंघ : दो मुक्तक

एकता और समता का संगान है श्रमण संघ।
जिनशासन की आन बान शान है श्रमण संघ।
मिलता है सबको स्थान और सम्मान जहाँ,
अनेकांत का सच्चा प्रतिमान है श्रमण संघ।

कषायमुक्त चर्या उजली उजाली है।
फूल रंग-बिरंगे, पर एक ही माली है।
जिसकी बुनियाद में ही मैत्री समन्वय,
महान श्रमण संघ की बात निराली है।

- डॉ. दिलीप धींग जैन

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की

स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स
स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप
30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित। केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ❊ सम्पर्क : 90197 31906